इकाई - 1

जिएँ जी भर...

पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय।

कबीर

कहानी

झटपट और नटखट

रमेश उपाध्याय

एक था झटपट, एक था नटखट। झटपट बड़ा था, नटखट छोटा। बड़ा केवल दो साल बड़ा था, छोटा केवल दो साल छोटा। दोनों स्कूल में पढ़ते थे। झटपट पाँचवीं में, नटखट तीसरी में। घर से दोनों भाई साथ-साथ स्कूल जाते और साथ-साथ ही वापस घर आते।

वे एक गाँव में रहते थे। स्कूल उनके गाँव में नहीं, दूर दूसरे गाँव में था। वहाँ तक पैदल जाना पड़ता था और पैदल ही वापस आना पड़ता था। जाते समय रास्ते में उन्हें कई चीज़ें मिलती थीं। पोखर, बरगद, खेत, बाग, नाला और नदी। वापस आने पर भी रास्ते में उन्हें कई चीज़ें मिलती थीं। नदी, नाला, बाग, खेत, बरगद और पोखर।

झटपट तेज़-तेज़ चलता था, नटखट धीरे-धीरे। झटपट बरगद तक पहुँच जाता, तब तक नटखट पोखर तक ही पहुँचा होता। झटपट बाग तक पहुँच जाता, तब तक नटखट खेत तक ही पहुँचा होता। झटपट नदी तक पहुँच जाता, तब तक नटखट नाले तक ही पहुँचा होता। माँ की हिदायत थी कि झटपट को छोटे भाई का ध्यान रखना है, नटखट को अपने साथ ही रखना है।

इसलिए झटपट को आगे निकल जाने पर पीछे मुड़कर देखना पड़ता। उन्हें नटखट को पुकारकर जल्दी चलने के लिए कहना पड़ता। बार-बार रुककर नटखट का इंतज़ार करना पड़ता। कभी स्कूल जाने के लिए देरी होती देख नटखट का हाथ पकड़कर अपने साथ दौड़ाना भी पड़ता। झटपट परेशान हो जाता और घर लौटकर माँ से शिकायत करता, "माँ, छोटा बहुत परेशान करता है।" "छोटा है न!" माँ मुसकरा देतीं, "और बड़े को तो छोटे का ध्यान रखना ही पड़ता है।"

'और बड़े को तो छोटे का ध्यान रखना ही पड़ता है।' माँ के इस कथन से आप क्या समझते हैं?

झटपट झुंझलाता, पर कुछ कह न पाता। बड़ा था। छोटे का ध्यान तो उसे रखना ही था। लेकिन उसे लगता कि नटखट कुछ ज़्यादा ही नटखट है। रास्ता चलते रुककर पोखर के पानी के अंदर की मछलियाँ और पानी के ऊपर की बतखें देखने लगता है। बरगद की ऊपर से नीचे आती जड़ें पकड़कर झूलने लगता है। खेत में घुसकर खाने की कोई चीज़ खोजने लगता है। बाग से गुज़रने पर आम या अमरूद तोड़ने लगता है। नाले को उधर से इधर और इधर से उधर छलाँग लगाकर पार करने का खेल खेलने लगता है। नदी के पुल को जल्दी से पार करने के बजाय उसकी मुंडेर से टिककर नीचे बहती नदी को निहारने लगता है।

'नटखट कुछ ज़्यादा ही नटखट है'- ऐसा क्यों कहा गया है?

एक दिन तो नटखट ने हद ही कर दी। दोनों भाई स्कूल से लौट रहे थे। नदी का पुल आया, तो नटखट पुल पर चढ़ने के बजाय नीचे उतर गया और नदी किनारे जा पहुँचा। बस्ते में पहले से बनाकर रखी हुई कागज़ की दो नावें निकालीं और एक-एक करके बहते पानी में छोड़ दीं। नावें बह चलीं, तो नटखट खुश होकर ताली बजाने लगा।

उधर पुल पर पहुँच चुके झटपट ने पीछे मुड़कर देखा, तो नटखट नहीं दिखा। झटपट घबरा गया कि नटखट कहाँ गया। ताली बजने की आवाज़ सुनकर नीचे देखा, तो नटखट नीचे नदी किनारे खड़ा दिखा। झटपट को उसपर बड़ा गुस्सा आया। ज़ोर से चिल्लाकर बोला, "अरे, छोटे! तुम वहाँ नीचे क्या कर रहे हो?" नटखट ने चौंककर ऊपर देखा और नदी किनारे रखा अपना बस्ता उठाने के लिए झुका। अचानक उसका पाँव फिसला और वह पानी में गिर पड़ा। पानी का बहाव तेज़ था और नटखट को तैरना नहीं आता था। छोटा-सा ही तो था। बह गया। डूबते-उतराते दूर जाने लगा।

झटपट को तैरना आता था। उसने झट अपना बस्ता पीठ से उतारकर पुल की मुंडेर पर रखा और नदी में कूद पड़ा। थोड़ी दूर तैरने के बाद ही उसने नटखट को पकड़ लिया और किनारे पर ले आया। झटपट को इतना गुस्सा आ रहा था कि नटखट को दो झापड़ लगाए, पर नटखट इतना डरा और घबराया हुआ था कि उसे छोटे भाई पर प्यार आ गया। उसने नटखट का हाथ पकड़े-पकड़े उसका बस्ता उठाया और पुल तक पहुँचाने वाली चढ़ाई चढ़ने लगा।

पुल पर पहुँचा ही था कि नटखट अचानक गला फाड़कर रोने लगा। झटपट ने कहा, "अब तो तुम बह जाने से बच गए हो, फिर क्यों रो रहे हो?'' नटखट ने रोते-रोते कहा, "तुम घर जाकर माँ से मेरी शिकायत करोगे।"

"अगर न करूँ, तो?" "तो जो कहो।" नटखट का रोना बंद हो गया। "मुझे कागज़ की नाव बनाना नहीं आता। तुम सिखा दोगे?'' "हाँ, उसमें क्या है!" नटखट खुश होकर बोला, ''पर मुझे तैरना नहीं आता। तुम सिखा दोगे?'' "हाँ, उसमें क्या है!" झटपट ने मुसकराते हुए नटखट के शब्दों की नकल की और दोनों भाई हँस पड़े। लेकिन झटपट ने नटखट का बस्ता उसे पकड़ाकर पुल की मुंडेर पर से अपना बस्ता उठाया, तो एकदम चिंतित होकर बोला, "अरे, छोटे, हम दोनों के कपड़े भीग गए हैं। हमें भीगे कपड़ों में देख माँ पूछेंगी, तो क्या कहेंगे?'' ''हाँ बड़े! अब?" नटखट ने एक पल सोचा और बोला, "आओ, दौड़ लगाते हैं। कपड़े अपने-आप सूख जाएँगे।" "हाँ, यह ठीक है।" झटपट ने अपना बस्ता पीठ पर टाँगते हुए कहा।

नटखट ने भी अपना बस्ता पीठ पर टांग लिया और झटपट के बराबर खड़े होकर दौड़ शुरू करने के अंदाज़ में बोला, "एक... दो... तीन!" दोनों दौड़ पड़े। आगे-पीछे नहीं, एक-दूसरे का हाथ पकड़े साथ-साथ।

कपड़े सुखाने के लिए दोनों भाइयों ने एक उपाय किया। और क्या-क्या उपाय हो सकते हैं?

सर्दियाँ अभी शुरू नहीं हुई थीं। मौसम साफ़ था। चटकीली धूप निकली हुई थी। दोनों भाई मजे में दौड़ते चले गए। नाला पार किया। बाग पार किया। खेत पार किया। बरगद को भी पीछे छोड़ दिया। लेकिन पोखर तक पहुँचते-पहुँचते दोनों थक गए और रुक गए।

"कपड़े सूख गए, छोटे!" झटपट ने हाँफते हुए लेकिन खुश होते हुए कहा। "हाँ, बड़े, वाकई! कपड़े तो सूख गए!" नटखट ने भी खुश होकर कहा।

तभी नटखट को पोखर किनारे एक चिकनी गिट्टी दिखाई पड़ी। नटखट ने उसे उठा लिया और तिरछे होकर उसे इस तरह फेंका कि गिट्टी पानी की सतह पर उछलती हुई दूर तक चली गई। देखा-देखी झटपट ने भी एक गिट्टी उठाकर फेंक दी। लेकिन उसकी गिट्टी एकदम पानी में गुडुप हो गई। "बड़े, तुमको गिट्टी पैराना नहीं आता?" "हाँ, छोटे, तुम सिखा सकते हो?"

"क्यों नहीं! अभी लो!" नटखट ने ध्यान से नीचे देखकर एक गिट्टी उठाई और झटपट को दिखाते हुए बोला, "गिट्टी ऐसी लो जो ज्यादा भारी और खुरदुरी न हो। हल्की और चिकनी हो। और उसे इस तरह फेंको..."

लेकिन अब तक झटपट का ध्यान बँट चुका था। वह पोखर के पानी पर तैरती बतखों को ध्यान से देख रहा था।

कहानी के पात्रों की विशेषताएँ पहचानें, सही मिलान करें :

नटखट	**को**	कागज़ की नाव बनाना आता है।
		नदी में तैरना आता है।
झटपट		बाग से आम तोड़ता है।
		माँ से शिकायत करता है।
		बरगद की जड़ें पकड़कर झूला झूलता है।
		छोटे का हाथ पकड़ कर दौड़ाता है।

कहानी से शब्द-जोड़े चुनें, अपने वाक्य में प्रयोग करें :

जैसे :-

- भाई और मैं **साथ-साथ** पढ़ते और **साथ-साथ** ही खेलते।

झटपट को तैरना आता है, नटखट को नाव बनाना आता है। लिखें, आपको क्या-क्या आता है?

जैसे:- • मुझे साइकिल चलाना आता है।

सही प्रस्ताव चुनकर लिखें :

- दोनों भाई अपने गाँव के स्कूल में पढ़ते हैं।
- नटखट को गिट्टी पैराना आता है।
- नटखट हमेशा रोते हुए स्कूल आता है।
- बड़ा भाई पाँचवीं कक्षा में पढ़ता है।
- झटपट को स्कूल के रास्ते में कई बार छोटे का इंतजार करना पड़ता है।

अनुभव बाँटें :

झटपट और नटखट एक दूसरे को नाव बनाना और नदी में तैरना सिखाने का वादा करते हैं। इसी प्रकार का आपका कोई अनुभव बाँटें।

पोस्टर तैयार करें :

झटपट ने नदी में कूद कर नटखट की जान बचाई। मान लें, इसपर स्कूल में बधाई समारोह हो रहा है। इसके लिए पोस्टर तैयार करें।

चर्चा करें :

मान लें, आपको तैरना नहीं आता। नटखट की जान बचाने के लिए आप क्या करते?

समझें, लिखें :

नमूने देखें; रेखांकित अंश पर ध्यान दें, अर्थभेद समझें।

झटपट दौड़ **लगाता है**।	झटपट दौड़ **लगा रहा है**।
झटपट और नटखट दौड़ **लगाते हैं**।	झटपट और नटखट दौड़ **लगा रहे हैं**।
मछली **तैरती है**।	मछली **तैर रही है**।
नदियाँ **बहती हैं**।	नदियाँ **बह रही हैं**।

नमूने के अनुसार वाक्य बदलकर लिखें :

नटखट रोता है।	.....
.....	झटपट और नटखट स्कूल से आ रहे हैं।
.....	नाव चल रही है।
सर्दियाँ शुरू होती हैं।	.....

बातचीत लिखें :

मान लें, नटखट ने घर पहुँचकर रास्ते की सारी घटनाएँ माँ को बता दीं। दोनों के बीच की बातचीत लिखें।

ऑडियो बनाएँ :

अब इस कहानी का ऑडियो तैयार करें।

रमेश उपाध्याय

जन्म : 1 मार्च 1942
मृत्यु : 24 अप्रैल 2021

रमेश उपाध्याय का जन्म उत्तर प्रदेश में हुआ। वे कहानी, उपन्यास, नाटक, नुक्कड़ नाटक, आलोचना आदि विधाओं में सक्रिय रहे। दंड द्वीप, हरे फूल की खुशबू, शेष इतिहास आदि उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। वे गणेश शंकर विद्यार्थी पुरस्कार से सम्मानित हैं।

मदद लें...

पोखर - तालाब
बरगद - वटवृक्ष
बाग - बगीचा
नाला - छोटा जल प्रवाह
हिदायत - നിർദ്ദേശം, instruction, ನಿರ್ದೇಶ, பரிந்துரை
इंतज़ार करना - प्रतीक्षा करना
देरी - विलंब
परेशान - व्याकुल
शिकायत - പരാതി, complaint, ದೂರು, புகார்
झुंझलाना - क्रोध एवं व्यथा से बोलना
बतख - താറാവ്, duck, ಬಾತುಕೋಳಿ, வாத்து
जड़ - വേര്, root, ಬೇರು, வேர்
झूलना - ആടുക, to swing, ಉಯ್ಯಾ ಲೆಯಾಡು, ஆடுதல்
घुसना - प्रवेश करना
छलांग मारना - കുതിച്ചു ചാടുക, to leap, ಜಿಗಿಯು, குதித்தல்
पुल - പാലം, bridge, ಸೇತುವೆ, பாலம்
मुंडेर - മുണ്ടേര, കൈവരി, railing, ಕೈಹಿ ಡಿ, கைப்பிடி
टिकना - ठहरना
निहारना - गौर से देखना

हद कर देना - പരിധി ലംഘിക്കുക, to cross the limit, ಸೀಮೆಯನ್ನು ಉಲ್ಲಂಘಿಸು, **எல்லை மீறுதல்**

बस्ता - पुस्तक रखने की थैली, school bag, ಚೀಲ, **புத்தகப்பை**

कागज़ की नाव - കടലാസ് തോണി, paper boat, ಕಾಗದದ ದೋಣಿ, **காகிதப்படகு**

ताली बजाना - കൈയ്യടിക്കുക, to clap, ಚಪಾಳೆ ತಟ್ಟು, **கை ட்டுதல்**

घबराना - പരിഭ്രമിക്കുക, to panic, ಗಾಬರಿಯಾಗು, **நடுக்கம்**

गुस्सा - कोप

चौंकना - चकित होना

अचानक - सहसा

पाँव फिसलना - पैर फिसलना

बहाव - प्रवाह

झट - तुरंत

नकल करना - अनुकरण करना

दौड़ लगाना - तेज़ी से भागना

टाँगना - लटकाना

अंदाज़ - हावभाव

मौसम - കാലം, season, ಕಾಲ, **பருவகாலம்**

चटकीली - चमकीली

धूप - വെയിൽ, sunlight, ಬಿಸಿಲು, **வெயில்**

सूखना - ഉണങ്ങുക, to become dry, ಒಣಗುವುದು, **உலர்தல்**

हाँफना - കിതയ്ക്കുക, to pant, ಏದುಸಿರುಬಿಡು, **மூச்சு வாங்குதல்**

वाकई - वास्तव में

तिरछे होकर - വളഞ്ഞ്, bent over, ಬಾಗಿಕೊಂಡು, **வளைந்த**

गिट्टी - पत्थर का छोटा टुकड़ा

गुड्डप हो जाना - अप्रत्यक्ष हो जाना

गिट्टी पैराना - पानी में पत्थर उछालना

भारी - ഭാരമുള്ള, heavy, ಭಾರವಿರುವ, **சுமை**

खुरदुरी - പരുപരുത്ത, rough, ದೊರಗಾದ, **கரடுமுரடான**

ध्यान बंटना - ध्यान हट जाना

कविता

बहुत दिनों के बाद

नागार्जुन

बहुत दिनों के बाद
अबकी मैंने जी भर देखी
पकी-सुनहली फ़सलों की मुसकान
—बहुत दिनों के बाद

'फ़सलों की मुसकान' -से क्या तात्पर्य है?

बहुत दिनों के बाद
अबकी मैं जी भर सुन पाया
धान कूटती किशोरियों की कोकिलकंठी तान
—बहुत दिनों के बाद

'धान कूटती किशोरियों की कोकिलकंठी तान' - इससे आपने क्या समझा?

बहुत दिनों के बाद
अबकी मैंने जी भर सूँघे
मौलसिरी के ढेर-ढेर से ताज़े-टटके फूल
—बहुत दिनों के बाद

बहुत दिनों के बाद
अबकी मैं जी भर छू पाया
अपनी गँवई पगडंडी की चंदनवर्णी धूल
—बहुत दिनों के बाद

'गँवई पगडंडी की चंदनवर्णी धूल' -यहाँ गाँव का कौन-सा चित्र प्रकट होता है?

बहुत दिनों के बाद
अबकी मैंने जी भर तालमखाना खाया
गन्ने चूसे जी भर
—बहुत दिनों के बाद

बहुत दिनों के बाद
अबकी मैंने जी भर भोगे
गंध-रूप-रस-शब्द-स्पर्श सब साथ-साथ इस भू पर
—बहुत दिनों के बाद

चर्चा करें :

अबकी मैंने ***जी भर*** देखी
अबकी मैं ***जी भर*** सुन पाया

कविता में 'जी भर' शब्द का प्रयोग बार-बार हुआ है। इसकी विशेषता पर चर्चा करें।

कवि ने कविता में कई विशेष अर्थवाली पंक्तियों का प्रयोग किया है। ऐसी पंक्तियाँ पहचानकर लिखें :

जैसे,

- किशोरियों की कोकिलकंठी तान
- .....
- .....
- .....
- .....

समान आशयवाली पंक्तियाँ कविता से चुनकर लिखें :

- खेत स्वर्णवर्णी फ़सलों से समृद्ध है।
- ग्रामीण बालाएँ मेहनत करते हुए मधुर गीत गाती हैं।
- तन-मन को ऊर्जा देनेवाली खुशबू फैल जाती है।
- गाँव की गलियों की सुनहली धूलि का एहसास हुआ।
- मनपसंद देहाती खाना चखने का मौका मिला।

कविता से इन पदों की विशेषता सूचित करनेवाले शब्द पहचानकर लिखें :

- फ़सल
- तान
- फूल
- धूल

कविता का आशय लिखें :

कविता-संकलन करें :

प्रकृति प्रेम का चित्रण करनेवाली अनेक कविताएँ हैं। ऐसी कविताओं का संकलन करें और कक्षा में प्रस्तुत करें।

नागार्जुन

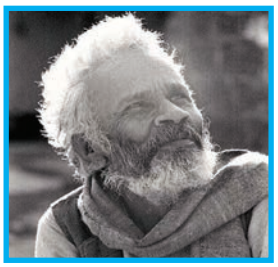

जन्म : 30 जून 1911
मृत्यु : 05 नवंबर 1998

हिंदी के प्रगतिशील साहित्यकार नागार्जुन का जन्म बिहार के दरभंगा में हुआ। उनका मूल नाम वैद्यनाथ मिश्र है। उन्होंने मैथिली, बंगला तथा संस्कृत में भी रचनाएँ की हैं। सतरंगे पंखोंवाली, रतिनाथ की चाची, बलचनमा, वरुण के बेटे आदि उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। भारत भारती सम्मान, साहित्य अकादमी पुरस्कार आदि से वे विभूषित हैं।

मदद लें...

जी - मन

पकी - വിളഞ്ഞു നിൽക്കുന്ന, ripe, ಬೆಳೆದು ನಿಂತಿರುವ, விளைந்து நிற்கும்

सुनहला - सोने के रंग का

फ़सल - खेती की उपज

धान कूटना - നെല്ല് കുത്തുക, to husk the rice, ಭತ್ತಕುಟ್ಟುವುದು, நெல்குற்றுதல்

किशोरी - कुँआरी

कोकिलकंठी - सुरीली आवाज़ वाली

तान - നാദം, tone, ನಾದ, நாதம்

सूँघना - सुगंध लेना

मौलसिरी - ഇലഞ്ഞി, Spanish Cherry, ಬಕುಳದ ಹೂವು(ರೆಂಜದ ಹೂವು), இலஞ்சி/மகிழமரம்

ताज़े-टटके - പുതുപുത്തനായ, fresh, ತಾಜಾ, புதிய

गँवई - ग्रामीण

पगडंडी - ഒറ്റയടിപ്പാത, trail, ಕಾಲುದಾರಿ, ஒற்றை அடிப்பாதை

तालमखाना - एक औषधीय पौधा

गन्ना - ഈഖ, കരിമ്പ്, sugar cane, ಕಬ್ಬು, கரும்பு

चूसना - होंठों से रस खींचना

भोगना - अनुभव करना

भू - धरती

शस्ति / ब्लर्ब

बूढ़ी काकी

मूल कहानी : प्रेमचंद

निर्देशक : गुलज़ार

आधुनिक हिंदी साहित्य के कालजयी कथाकार प्रेमचंद की एक मार्मिक कहानी है 'बूढ़ी काकी'। मानवीय करुणा की भावना से ओतप्रोत इस कहानी में बुढ़ापे की समस्या को प्रस्तुत किया गया है। वृद्धजनों की जायदाद-संपत्ति लेने के बाद उनकी उपेक्षा करनेवाले सामाजिक यथार्थ की ओर कहानी इशारा करती है। बूढ़ी काकी को विधवा हुए पाँच वर्ष हो चुके हैं। उसके जवान बेटे की भी अकाल मृत्यु हुई। इस संसार में बूढ़ी को अपना कहनेवाला कोई नहीं। काकी अपनी सारी संपत्ति भतीजे के नाम करवाकर उसके साथ रहती थी। इनसान के लालच की कोई सीमा नहीं होती... बुद्धिराम और रूपा अपनी काकी के प्रति तब तक बहुत अच्छे रहते हैं जब तक कि वह उन्हें अपनी सारी संपत्ति उपहार में नहीं दे देती। वे लोग बात-बात पर बूढ़ी काकी का अपमान और तिरस्कार करते थे। भरपेट भोजन से भी वह वंचित थी। जो रिश्ते ढीली बुनियाद पर टिके होते हैं, वे रिश्ते ही खत्म हो जाते हैं। छोटी लड़की लाड़ली, परिवार में एकमात्र ऐसी है जो उस गरीब आत्मा की देखभाल करती है। मुंशी प्रेमचंद की अविस्मरणीय कहानी पर गुलज़ार की संवेदनशील और मार्मिक लघु फ़िल्म...

फ़िल्म देखें, मुख्य घटनाओं को सूचीबद्ध करें :

- .....
- .....
- .....
- .....
- .....

- लिखें, फ़िल्म के मुख्य पात्र कौन-कौन हैं?
- बताएँ, यह फ़िल्म किस समस्या की ओर संकेत करती है?

इसपर ध्यान दें :

शस्ति अथवा ब्लर्ब क्या है?

ब्लर्ब किसी पुस्तक, सिनेमा या अन्य सृजनकार्य के प्रचार के लिए लिखे जाने वाले प्रेरक सारांश है। ब्लर्ब में किताब या फ़िल्म से संबंधित महत्वपूर्ण बातों को ही शामिल किया जाता है। इसमें रचना और रचनाकार से संबंधित संक्षिप्त विवरण शामिल होगा। किसी लोकप्रिय पात्र हो तो उसका भी ज़िक्र करना अच्छा होगा। ब्लर्ब आम तौर पर किताब या प्रचरण सामग्री के पिछले आवरण पृष्ठ पर छपा जाता है। ब्लर्ब के छापने का मुख्य उद्देश्य रचना की तरफ़ पाठक या दर्शक को आकर्षित करना है। ब्लर्ब पढ़ते ही पाठक या दर्शक किताब पढ़ने या फ़िल्म देखने के लिए प्रेरित हो जाएँ। इस दृष्टि से देखा जाए तो ब्लर्ब स्वयं ही एक सृजनात्मक कार्य है। इसकी भाषा और प्रस्तुति की शैली अनोखी हो ताकि पढ़ते ही पाठक रचना के प्रति आकर्षित हो जाएँ।

किताब की शस्ति का यह नमूना पढ़ें :

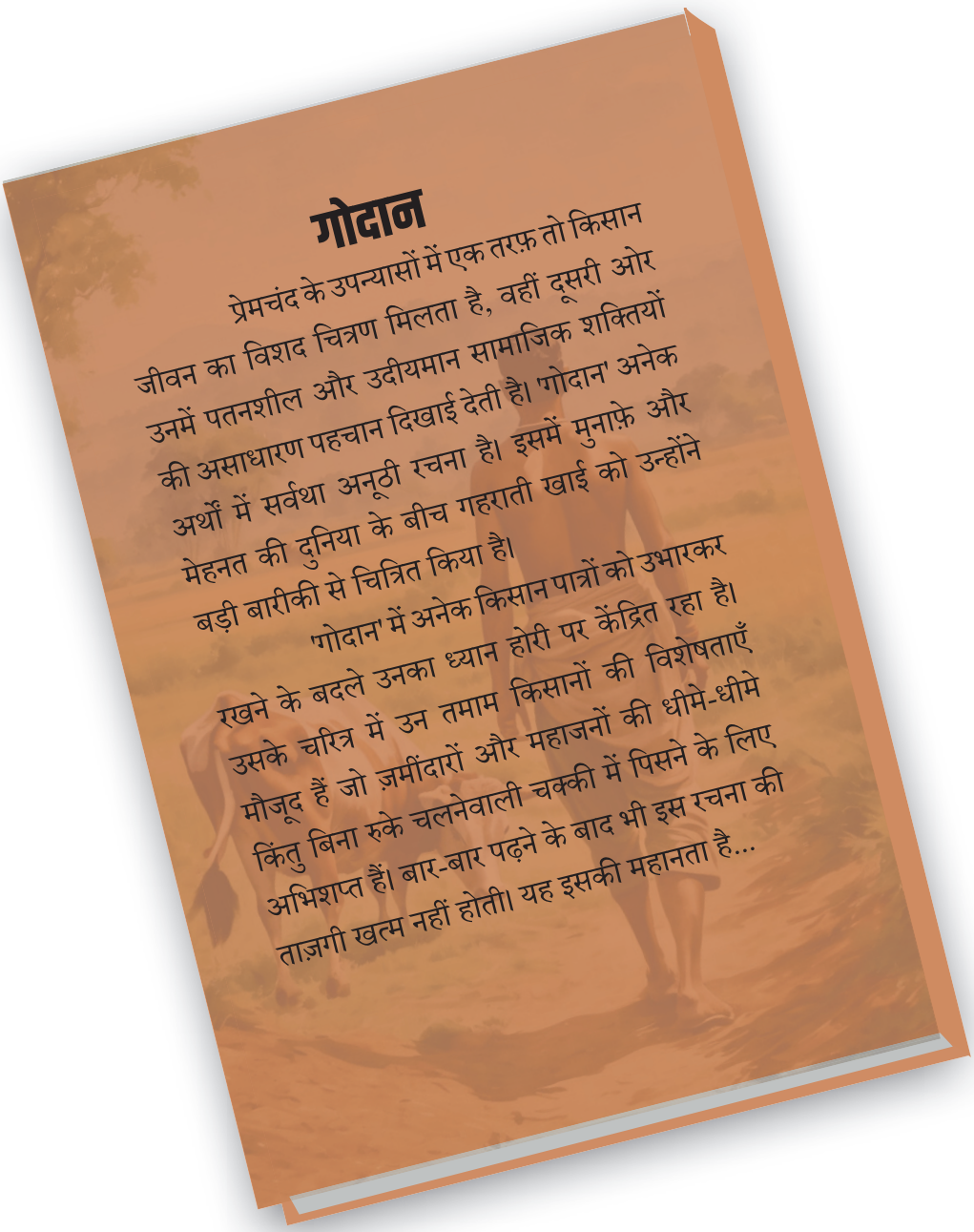

किसी मनपसंद किताब या फ़िल्म की शस्ति तैयार करें।

इकाई के पाठों से एक बार और गुज़रें, तालिका की पूर्ति करें :

वाक्य	सही	गलत
बड़ा भाई नदी में कूदकर छोटे की जान बचाता है।		
कई दिनों के बाद कवि ग्रामीण सौंदर्य का आस्वादन करते हैं।		
बुद्धिराम और रूपा हमेशा बूढ़ी काकी का आदर करते थे।		
बूढ़ी काकी के युवा पुत्र की अकाल में मृत्यु हुई।		
दो बालक कपड़े सुखाने के लिए धूप में खेलते हैं।		
अपने गाँव की हालत देखकर कवि बहुत परेशान है।		
मेहनती बालिकाओं का गाना मन में खुशी लाता है।		

प्रेमचंद

जन्म : 31 जुलाई 1880
मृत्यु : 08 अक्तूबर 1936

हिंदी के सबसे महान कथाकार हैं प्रेमचंद। उनका असली नाम धनपतराय श्रीवास्तव है। उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं- मानसरोवर (आठ भाग), रंगभूमि, गबन, निर्मला, गोदान आदि।

गुलज़ार

जन्म : 18 अगस्त 1934

गुलज़ार हिंदी गीतकार होने के साथ ही गज़लकार, पटकथा लेखक, फ़िल्म निर्देशक भी हैं। पद्मभूषण, ऑस्कार पुरस्कार, साहित्य अकादमी पुरस्कार, दादा साहब फाल्के पुरस्कार आदि से वे सम्मानित हैं।

मदद लें...

बूढ़ी	-	वृद्धा
काकी	-	चाचा/ काका की पत्नी
ओतप्रोत	-	बहुत मिला हुआ
बुढ़ापा	-	वृद्धावस्था
जवान	-	युवा
भतीजा	-	भाई का पुत्र
लालच	-	लोभ, अत्याग्रह
रिश्ता	-	संबंध
ढीली	-	हल्की
बुनियाद	-	अस्तित्व
खत्म होना	-	समाप्त होना
लाड़ली	-	प्यारी
देखभाल करना	-	संरक्षण करना
संवेदनशील	-	सहानुभूतिपूर्ण

इकाई मुखपृष्ठ के कवि

कबीर

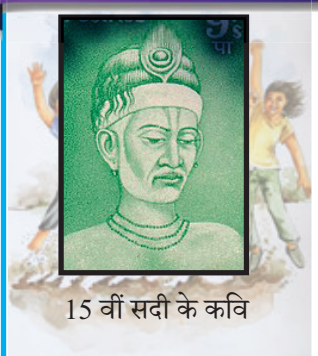

15 वीं सदी के कवि

कबीर 15वीं सदी के संत कवि थे। वे हिंदी साहित्य के भक्ति काल की निर्गुण शाखा के कवि थे। उन्होंने समाज में फैली कुरीतियों और अंधविश्वासों की निंदा की और सामाजिक बुराइयों की कड़ी आलोचना की। ऐसा माना जाता है कि कबीर की वाणी का संग्रह उनका शिष्य धर्मदास ने बीजक के नाम से सन् 1464 में किया। इसके तीन भाग हैं– साखी, सबद और रमैनी।